



# पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर-263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षक: डा. तेज प्रताप, कुलपति

मुख्य सम्पादक: डा. पी. एन. सिंह, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी

सम्पादक: डा. बी. डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

## कुलपति संदेश



उत्तराखण्ड 09 नवम्बर, 2000 को बना देश का नव सृजित राज्य है, जिसकी तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। राज्य में भौगोलिक क्षेत्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा पहाड़ी है जहां वर्षा आधारित खेती, छोटे व बिखरी हुई जोत, सीमान्त और छोटी जोत का भारी प्रतिशत, बुनियादी विपणन ढांचे का अभाव, वन्य जीवों से फसलों को क्षति, मौसम में बदलाव आदि के कारण अधिकांश कृषि की उत्पादकता अत्यन्त कम है। परिणाम स्वरूप यहां का नवयुवक अपने भरण-पोषण एवं स्वरोजगार की तलाश में मैदानों की तरफ पलायन करता है। स्थिति यह है कि आज अनेकों गांव वीरान हो चुके हैं तथा खेती योग्य अधिकांश भूमि बंजर हो गयी है। पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन को रोकने के लिए कृषि एवं कृषि से जुड़े क्षेत्रों में विशेष कार्य करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रसार गतिविधियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से राज्य के सुदूरवर्ती अंचलों तक कृषकों, महिला कृषकों एवं युवकों को कृषि की आधुनिक तकनीकी की समुचित जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है, जिसे व्यवहार में लाकर वे आजीविका

एवं रोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि कर सकते हैं। उत्तराखण्ड का पहाड़ी क्षेत्र जैव विविधता में समृद्ध होने के साथ-साथ वहां की जलवायु बेमौसमी सब्जियों, बागवानी, संगन्ध व औषधीय फसलों, फूलों की खेती, मत्स्य पालन, डेयरी, मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन आदि के अत्यन्त अनुकूल है। यहां के कृषकों विशेष रूप से ग्रामीण युवाओं को इन क्षेत्रों में तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनका कौशल विकास कर उन्हें खेती के प्रति आकर्षित किया जाना होगा, जिसे हमारे विश्वविद्यालय व कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक बखूबी कर रहे हैं।

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका "पन्त प्रसार सन्देश" का प्रकाशन अत्यन्त प्रशंसनीय एवं स्वागत योग्य कदम है। इस पत्रिका के अप्रैल-जून, 2019 (अंक 14 : 2) के माध्यम से विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रसार गतिविधियों को आप तक पहुंचाकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने एवं सुदूर क्षेत्रों तक विस्तारित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाएँ।

(तेज प्रताप)  
कुलपति

## कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

### कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 06 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 120 कृषकों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया। केन्द्र द्वारा 179 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, 39 परीक्षण जो कृषि, पशुपालन, सब्जी एवं गृह विज्ञान विषय से सम्बन्धित थे, का आयोजन किया गया।
- केन्द्र के तत्वाधान में जून 15 को 'जल एवं ऊर्जा संरक्षण' विषयक एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उत्तराखण्ड अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (उरेडा) द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रशिक्षण में कृषकों को फसल की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले जल प्रयोग में बचत करने के तरीकों की जानकारी दी। दैनिक जीवन में किस प्रकार जल को संरक्षित किया जा सकता है इस पर भी गहन चर्चा की गई। खेती एवं दैनिक जीवन में ऊर्जा के विवेकपूर्ण प्रयोग पर भी चर्चा की गई। जनपद के विभिन्न ग्रामों से बड़ी संख्या में प्रगतिशील कृषकों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।



प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए प्रतिभागी

- केन्द्र द्वारा जून 05 को "विश्व पर्यावरण दिवस" मनाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण पर गोष्ठी एवं पौधारोपण किया गया। जून 21 को केन्द्र द्वारा



विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

“विश्व योग दिवस” मनाया गया। इस अवसर पर सभी कार्मिकों द्वारा योग किया गया तथा योग करने के लाभ और दैनिक जीवन में योग के महत्व पर चर्चा की गई।

## कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में फरवरी-मार्च में बोये गये आलू में मुख्य रूप से पछेता झुलसा का प्रकोप अप्रैल-मई माह में होता है। पछेता झुलसा के प्रबन्धन के लिए केन्द्र द्वारा लगभग 0.3 है. में 15 कृषकों के प्रक्षेत्र पर आन फार्म ट्रायल लगाया गया, जिसमें कृषकों को कृषि निवेश के रूप में ट्रीटमेन्टवार फफूँदी नाशक उपलब्ध कराया जा रहा है।
- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत सोयाबीन की वी.एल. 65 व वी.एल. 47 के 0.6 है. क्षेत्रफल में 40 कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रजातीय प्रदर्शन लगाये गये हैं। दलहनी फसलों के अन्तर्गत उर्द की पंत उर्द 35 की 02 है. तथा गहत की वी.एल. गहत 15 तथा वी.एल. गहत 19 की 2.20 है. क्षेत्रफल में 120 प्रदर्शन लगे हैं। अन्य फसलों के अन्तर्गत धान की दो प्रजातियाँ नरेन्द्र धान 359 व पंत धान 11 के परीक्षण हेतु कुल 06 है. क्षेत्र में तथा मडुआ की वी.एल. 352 प्रजाति का 03 है. क्षेत्र में 60 कृषकों के प्रक्षेत्र पर लगाया गया। प्रदर्शनों को प्रभावी बनाने हेतु प्रक्षेत्र दिवस का भी आयोजन किया गया है।
- चौलाई में लगने वाले पर्ण जालक कीट के प्रबन्धन हेतु 03 है. क्षेत्र में 63 प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाया गया हैं। प्रदर्शन के अन्तर्गत कृषकों को चौलाई की वी. एल. चुआ 44 प्रजाति उपलब्ध करायी गयी।
- कृषकों एवं कृषक महिलाओं हेतु 10 प्रशिक्षण यथा सब्जियों व फसलों में एकीकृत रोग एवं कीट नियंत्रण, जैविक रसायन बनाना, फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन, मछली-मुर्गी सह सब्जी उत्पादन तथा समूह में क्षमता विकास आदि आयोजित किए गये, जिसमें कुल 201 कृषक प्रतिभाग किये।
- कृषि सम्बन्धी नवीनतम तकनीक के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु लोहाघाट व पाटी ब्लाक में 02 किसान गोष्ठी का आयोजन कर कुल 35 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- कृषकों के विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु कृषकों के प्रक्षेत्र पर कुल 05 भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 37 कृषकों के खेत में जाकर उनकी कीड़े-बीमारी पर अन्य कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निदान किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 06 स्वयं सहायता समूह की बैठक में भाग लिया गया, जिसमें कुल 153 कृषकों की भागीदारी रही।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों ने जनपद में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में कृषि विषयक 04 व्याख्यान दिये, जिसमें कुल 116 कृषकों की उपस्थिति रही।
- प्रक्षेत्र पर कुल 0.90 कु. जई बीज का उत्पादन किया गया। इसके अतिरिक्त

फूलगोभी (गिरजा), पत्तागोभी (वरुण), शिमला मिर्च (कैलीफोर्निया वण्डर), बैंगन (छाया), टमाटर (मनीषा, हिमसोना) की उन्नत प्रजातियों की कुल 10610 पौध तैयार कर 54 प्रगतिशील कृषकों के प्रक्षेत्र पर लगवाया गया।

- बेमौसमी सब्जी उत्पादन को बढ़ाने के लिए संरक्षित खेती के अन्तर्गत केन्द्र पर पालीहाउस में अप्रैल 02 को फूलगोभी की गिरजा प्रजाति का रोपण किया गया। मात्र 100 वर्ग मी. के



पालीहाउस में गोभी की गिरजा प्रजाति का प्रदर्शन

पालीहाउस से 70 से 75 दिनों में लगभग 90 कि.ग्रा. गोभी का उत्पादन लिया गया तथा ₹ 2700.00 की आय हुई। यह तकनीक कृषकों के बीच काफी लोकप्रिय हो रही है तथा आस-पास के लगभग 35 कृषक इस तकनीक का लाभ ले रहे हैं।

- संयुक्त निदेशक प्रसार, डा. एम. एस. पाल द्वारा जून 19-20 को केन्द्र तथा ग्राम सुई डुंगरी व डुंगरी फर्त्याल में कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर विभिन्न फसलों पर लगाये गये प्रदर्शनों का अवलोकन किया गया।



प्रक्षेत्र भ्रमण का आयोजन

## कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना-एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र पर 16 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गये, जिसमें 349 कृषक (पुरुष 211 एवं महिला 138) लाभान्वित हुए। ग्रामीण युवाओं को केन्द्र पर 01 प्रशिक्षण दिया गया, जिससे कुल 10 युवा लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 01 प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसके द्वारा 20 प्रशिक्षणार्थी (पुरुष 16 एवं महिला 04) लाभान्वित हुए।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत टमाटर 2.0 है., शिमला मिर्च 2.0 है., बन्दगोभी 1.0 है., फ्रासबीन 1.0 है. व बकरी 10 और मुर्गी के 10 प्रदर्शन लगाये गये।
- वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर 39 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 310 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु किसानों द्वारा 87 भ्रमण किये गये, जिसमें 414 किसान लाभान्वित हुए।
- प्रभारी अधिकारी, डा. निर्मला भट्ट द्वारा जून 22-27 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन



अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बैंकॉक (थाईलैंड) में प्रतिभाग

“ग्लोवल इनिशियेटिव फॉर सस्टेनेबल डेवेलपमेंट” बैंकॉक, (थाईलैंड) में प्रतिभाग किया गया।

- केन्द्र के वैज्ञानिक द्वारा जून 30 को सुदर्शन आजीविका स्वायत्ता सहकारिता, सातशिलिंग, मूनाकोट, पिथोरागढ़ द्वारा आयोजित वार्षिक कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जून 25 व 27 को ग्रॉम-कुरोरी, ब्लाक-मूनाकोट में गाय व बकरी पर प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया, जिसमें 25 किसानों ने सहभागिता की।

## कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- केन्द्र की वार्षिक कार्य योजना 2019-20 के अनुसार प्रथम पंक्ति प्रदर्शन तथा प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं। पॉलीहाउस में पार्थिनोकार्पिक खीरा, शिमला मिर्च एवं टमाटर की उन्नतशील प्रजातियों का प्रदर्शन लगाया गया है तथा शेड नेट हाउस में अदरक प्रजाति रियो-डी-जेनेरियो एवं हल्दी प्रजाति पंत पीताम का प्रदर्शन लगाया गया है, जिसे देखकर कर केन्द्र पर आने वाले कृषक प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। विभिन्न प्रथम पंक्ति प्रदर्शन जैसे सोयाबीन, झंगोरा, मंडुवा, अरहर, चौलाई/रामदाना, अदरक, गेंदा, फ्रेंचबीन आदि संचालित किये गये हैं। ये प्रदर्शन कुल 5.60 है. क्षेत्रफल में 280 कृषक के प्रक्षेत्र पर चल रहे हैं। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 13 प्रशिक्षण केन्द्र के बाहर आयोजित किये गये, जिससे 247 कृषक लाभान्वित हुये हैं।
- जून 01-02 को माननीय कुलपति, डा. तेज प्रताप द्वारा भ्रमण किया गया। उक्त भ्रमण में डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य) भी मौजूद थे। अपने भ्रमण के दौरान माननीय कुलपति जी ने केन्द्र के कार्यक्रमों की समीक्षा की एवं चलाये जा रहे समस्त प्रसार कार्यक्रमों की प्रशंसा की। जून 02 को कुलपति महोदय द्वारा ग्राम देवर में चल रहे प्रदर्शनों का



प्रक्षेत्र का भ्रमण करते हुए मा. कुलपति, डा. तेज प्रताप

भी भ्रमण कर कृषकों से वार्ता की। कुलपति जी ने केन्द्र के सहयोग से चलाये जा रहे होम स्टे कार्यक्रम जो श्री मुकेश लाल, कृषक, ग्राम देवर द्वारा चलाया जा रहा है, का अवलोकन किया। श्री मुकेश लाल ने बुरांश का जूस, गुलाब जल का जूस एवं जैविक खेती से उत्पादित सब्जियों एवं दाल के उत्पादन एवं बाजार व्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

- वैज्ञानिकों द्वारा आकाशवाणी देहरादून के कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया गया। केन्द्र पर 37 कृषकों द्वारा भ्रमण किया तथा वैज्ञानिकों द्वारा 73 बार अंगीकृत गांव में भ्रमण किया गया। दो गांवों में महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया एवं उनकी बैठकों में प्रतिभाग किया गया।

## कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- गृह विज्ञान के अर्न्तगत 02 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 38 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा 70 कृषकों के

प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 249 कृषकों को कृषि सम्बन्धी तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराई गई एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।



प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित प्रतिभागी

- ग्रीष्मकालीन मक्का प्रथम पंक्ति प्रदर्शन जो 20 है. क्षेत्रफल में लगा है, का भ्रमण किया गया एवं मत्स्यकी के अन्तर्गत आयोजित प्रदर्शन कार्यक्रम



मक्का प्रक्षेत्र का भ्रमण करते हुए वैज्ञानिक

Indian Major caps and exotic variety and integration का अनुश्रवण किया गया। कृषकों की आय बढ़ाने हेतु जयन्ती रोहू प्रजाति के 05 परीक्षण का भी अनुश्रवण किया गया।

- मई 21 को ग्रीष्मकालीन मक्का उत्पादन पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन मटकोटा में हुआ, जिसमें पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. तेज प्रताप ने



प्रक्षेत्र दिवस पर उपस्थित मुख्य अतिथि, मा. कुलपति

कृषकों को सम्बोधित कर जनपद में मक्का उत्पादन किये जाने के लाभ बताये और कृषकों को नवीन तकनीकी अपनाने हेतु मार्ग दर्शित किया। प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी ने मक्का उत्पादन की सस्य क्रियाओं के विषय में जानकारी प्रदान की। मुख्य कृषि अधिकारी, डा. अभय सक्सेना ने कृषकों को संकर मक्का उत्पादन सिर्फ ग्रीष्मकालीन में करने की सलाह दी। इस अवसर पर वैज्ञानिक डा. एस.के. शर्मा, डा. प्रतिभा सिंह, श्री मनीष कुमार, प्रगतिशील कृषक, मेजर जयदीप, डा. प्रदीप सरोही एवं अन्य कृषकों ने परिचर्चा में भाग लिया। राकेट industries Monsanto company के प्रतिनिधि ने बीज की उपलब्धता, क्रय इत्यादि विषयों पर कृषकों को जानकारी प्रदान की।

- केन्द्र की कृषि सम्बन्धी गतिविधियों की समाचार पत्रों में 04 न्यूज प्रकाशित हुई। अप्रैल 28 को गुरुकुल स्कूल, काशीपुर द्वारा आयोजित शैक्षणिक मेला में डा. प्रतिभा सिंह एवं सबा मसूद द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिक डा. सी. तिवारी एवं डा. प्रतिभा सिंह द्वारा International Conference on Innovative Horticulture and Value Chain Management में मई 28-31 पंतनगर में प्रतिभाग एवं पेपर प्रस्तुतिकरण किया गया।

## गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/गतिविधियाँ

- अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (वस्त्र एवं परिधान विभाग) द्वारा ऐपण के माध्यम से उत्पाद विविधता: भाग-1 ब्लॉक प्रिंटिंग के अन्तर्गत मई 06-10 तक "चेष्टा कल्याण समीति" की 14 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में छपाई करने की विधि बताई गई तथा महिलाओं को ब्लॉक के डिजाइनों की व्यवस्था के विषय पर भी जानकारी दी गई। सीधा व पारुच बैंग की ड्राफ्टिंग व कटिंग करवाई गई तथा काटी गई पट्टियों पर ब्लॉक प्रिंटिंग की गई। इस प्रकार प्रिन्ट की गई पट्टियों द्वारा कुल 22 बैग का निर्माण किया गया। संस्था की समन्वयक ने भविष्य में इस प्रकार के अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु भी अनुरोध किया।



प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रशिक्षणार्थी

- वस्त्र एवं परिधान विभाग के अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना इकाई के वैज्ञानिक डा. मनीषा गहलौत, डा. पूजा भट्ट, डा. दीप्ति परगाई इत्यादि द्वारा जून 17-21 तक लमजाला गांव में महिलाओं के रोजाना प्रयोग होने वाले वस्त्र जैसे सलवार व पेटीकोट की ड्राफ्टिंग, कटाई व सिलाई का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान ड्राफ्टिंग को कपड़े पर ठीक प्रकार से कटाई के लिए रखने के नियम बताए गए। तत्पश्चात् कपड़ों की कटाई करवाई गई। कपड़े को ठीक प्रकार से काटने के बाद सिलाई करने के तरीके जैसे फेसिंग व पाइपिंग लगाना आदि बताया गया। प्रशिक्षण में कुल 12 प्रतिभागी थे।
- अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-गृह विज्ञान प्रसार द्वारा अप्रैल 24 एवं अप्रैल 26 को धनपुर गांव में ग्रामीण महिलाओं को पारम्परिक जलवायु संरक्षण के तरीकों पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके अंतर्गत उन्हें विद्युत ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण के महत्व एवं उपायों से अवगत कराया गया। साथ ही उन्हें इससे संबंधित प्रसार सामग्री वितरित की गई।

- को शान्तिनगर गांव में अप्रैल 26 ग. ा मी ण महिलाओं को मोबाइल फोन के उपयोग पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके अंतर्गत उन्हें मोबाइल फोन से कॉल मिलाना,



प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए प्रशिक्षणार्थी

- नंबर सेव करना एवं मेसेज उपयोग एवं रिसिव करना सिखाया गया। उन्हें मोबाइल फोन से कृषि, पशुपालन एवं घरेलू उपयोग से संबंधित जानकारी हासिल करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करना भी सिखाया गया।
- अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की पारिवारिक संसाधन प्रबन्ध विभाग की शोध टीम द्वारा पेपर बैग मेकिंग और उनके लाभों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अप्रैल 10 को चितरंजन भवन 02 कॉलोनी, पंतनगर में आयोजित किया गया।
- गृह विज्ञान महाविद्यालय से डा. अल्का गोयल, प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष, वस्त्र एवं परिधान विभाग, गृह विज्ञान महाविद्यालय को "यूनिवर्सिटी रेंटिंग

इम्पूवमेन्ट मॉनिटरिंग टीम" का सदस्य नामांकित किया गया।

- डा. अल्का गोयल, प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष, वस्त्र एवं परिधान विभाग आठवें आई.ए.यू.ए. "वर्कशॉप एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी गवरनेन्स सिस्टम- ड्राइविंग फ़ोसिस ऑफ़ चेन्ज एण्ड चैलेन्ज" मई 09-10, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में रेपोटियर रहीं।
- गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा अप्रैल 16 को कृषि विज्ञान केन्द्रों के गृह विज्ञान के वैज्ञानिकों के लिए एक मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- डा. दीपा विनय, प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष, पारिवारिक संसाधन प्रबन्ध विभाग ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना होमसाइंस के पुनर्गठन पर अप्रैल 29-30 के मध्य आयोजित एक मंथन कार्यशाला में भाग लिया। यह कार्यशाला कृषक महिला संस्थान के सौजन्य द्वारा चम्पै, हैदराबाद में आयोजित की गई।

## समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी-उत्तराखण्ड) राज्य के प्रगतिशील कृषक, मृदा एवं जल संरक्षण कार्मिक, कृषि विभाग के प्रसार कर्मी, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) हेतु 03 प्रशिक्षण क्रमशः समन्वित जलागम प्रबन्धन, मोटे अनाजों की उन्नत खेती एवं मूल्यवर्धन तथा मृदा उर्वरता प्रबन्धन एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड का आयोजन किया गया, जिससे कुल 26 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षणों का आयोजन प्रशिक्षण समन्वयक, डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) के मार्गदर्शन में किया गया।

## प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं-सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित



कुल 06 प्रशिक्षण प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. पी.एन. सिंह कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के विषय पशुपालन प्रबन्धन, पॉली हाउस निर्माण एवं सामान्य प्रबन्धन इत्यादि थे, जिससे कुल 154 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण द्वारा किया गया।

## एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पंतनगर कृषक हेल्पलाइन (05944-234810, 05944-235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800-180-1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों ने कुल 231 प्रश्न पूछे, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के कुल 445 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 16,565.00 के साहित्य एवं रू. 78,134.00 के विभिन्न सब्जियों के बीज क्रय किये गये। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

## आगामी तैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

### मैदानी क्षेत्रों में कृषि हेतु

#### माह जुलाई:

- धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए शाकनाशी जैसे बिस्पायरी बैक सोडियम 200-250 मि.ली./ है. अथवा पिनान्सुलम 100 मि.ली./ है. की दर से 3-5 पत्ती खरपतवार अवस्था पर खड़ी फसल में छिड़काव करें। रसायन प्रयोग के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। अधिक उपजवाली किस्मों में नाइट्रोजन 180, फास्फोरस 60, पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. तथा सुगन्धित धान (बौनी) किस्मों में नाइट्रोजन 80-120, फास्फोरस 60 तथा पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें।
- मूंगफली की बुवाई जुलाई मध्य तक कर लें। गुच्छेदार प्रजातियों के लिए प्रति 80-100 कि.ग्रा. तथा फैलने वाली प्रजातियों के लिए 60-80 कि.ग्रा./ है. बीज का प्रयोग करें। फैलने वाली प्रजातियों में 45 सेमी. तथा गुच्छेदार प्रजातियों में 30 सेमी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 15-20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखें।
- गन्ना में जलभराव वाले खेतों से जल निकास की व्यवस्था करें। जुलाई के प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की एवं अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त मिट्टी चढ़ाये। फसल की बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई करें। अगोला बेधक कीट की रोकथाम के लिए क्लोरानाईनीलीप्रोल 18.5 एस.सी. 375 मि.ली./ है. अथवा 0.4 जी.आर. 18.75 कि.ग्रा./ है. को नमी की दशा में प्रयोग करें। पाइरिल्ला या सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर फिप्रोनिल 5 प्रतिशत 1.50 लीटर को 600-800 लीटर पानी/ है. में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए जुलाई के प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में 60ग60 सेमी. की दूरी पर सायंकाल के समय रोपाई करें।
- फूलगोभी की अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत में 50\*30 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। नर्सरी में वीनियर कलम बांधने का कार्य प्रारम्भ करें।
- नीबूवर्गीय फल वृक्षों में कैंकर की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स-50 का छिड़काव करें। बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- अमरुद के फलदार बाग में नाइट्रोजनधारी उर्वरकों का प्रयोग करें।
- पपीता में जल निकास का प्रबन्ध करें। तना विगलन की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स-50 घोल का छिड़काव करें।
- लीची के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य करें। नये पौधे तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य कर लें।
- आंवला के बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। प्ररोह गांठ व रस्ट रोग की रोकथाम हेतु इण्डोफिल एम-45 का संस्तुत मात्रा में छिड़काव करें।
- नाशपाती में बीजू पौधों पर कलम बांधें। कज्जली रोग की रोकथाम हेतु पेड़ों पर जीनेब का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलू बुखारा में भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

#### माह अगस्त:

- धान में नत्रजन की पहली 1/4 भाग मात्रा कल्ले फूटते समय एवं दूसरी 1/4 भाग मात्रा बालियों में गोभ के निकलने से पहले यूरिया के रूप में ट्रापड्रेसिंग करें। खैरा रोग के नियंत्रण के लिए 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 कि.ग्रा. यूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। जीवाणु झुलसा के लक्षण दिखाई देते ही 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन व 500 ग्राम कॉपर-आक्सीक्लोराइड को आवश्यक पानी की मात्रा में घोलकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में यदि खेत में तना छेदक के औसतन

8-10 मृत गोभ तथा फुदका की 10-15 संख्या प्रति पौधा दिखाई दे तो कीटनाशी क्लोरानाईनीलीप्रोल 20 एस.सी. 150 मि.ली. तना छेदक के लिए तथा बुप्रोफेजिन 25 एस.सी. 1.0 लीटर/ है. को फुदका के नियंत्रण हेतु छिड़काव करें।

- उर्द एवं मूंग की शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई करें। इसके लिए मूंग की पंत मूंग-2, पी.डी.एम.-54, नरेन्द्र मूंग-1, पंत मूंग-4 व 5 एवं उर्द के लिए पंत उर्द-19, 35 व 40 व नरेन्द्र उर्द-1 बो सकते हैं।
- अरहर में पत्ती लपेटक कीट का प्रकोप होने पर क्वीनालफास 25 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में खरपतवार नियंत्रण के लिए एक निराई करें। यदि खेत में दीमक का प्रकोप हो तो थायोमेयोक्जम 75 एस.जी. 125 ग्राम/ है. का प्रयोग करें। टिक्का रोग नियंत्रण के लिए खड़ी फसल पर 2.5 ग्राम मैकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- टमाटर, बैंगन व मिर्च में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई, सिंचाई व जल निकास की व्यवस्था करें। टमाटर में झुलसा नामक बीमारी के नियंत्रण हेतु 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 का छिड़काव करें। बैंगन में फल तथा तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरानाईनीलीप्रोल 150 मि.ली./ है. का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। मिर्च में कीटों तथा बीमारियों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 व इमोमेक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. मात्रा का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन फसल की 45\*45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के पौधशाला में मूलवृत्त तैयार करने के लिए गुठलियों की बुवाई करें। नये पौधे तैयार करने के लिए 1 वर्ष पुराना मूलवृत्त पर वीनियर कलम बांधने का कार्य करें। शाखा गांठ कीट की रोकथाम के लिए डाइमथोएट (0.2 प्रतिशत) घोल का दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

#### माह सितम्बर:

- अरहर में तम्बाकू की इल्ली एवं फलीबेधक कीट के रोकथाम हेतु क्लोरानाईनीलीप्रोल 18.5 एस.सी. 150 मि.ली./ है. की दर से छिड़काव करें।
- मूंगफली में फूल बनने एवं खूंटियों के भूमि में प्रवेश तथा फलियों के विकास के समय भूमि में पर्याप्त नमी आवश्यक है। नमी के अभाव में सिंचाई का प्रबन्ध करें।
- वर्षा न होने पर गन्ना की फसल में सिंचाई करें। गन्ना की दूसरी बंधाई आवश्यकतानुसार करें। कण्डुवा व लाल सड़न ग्रसित पौध दिखाई देने पर सावधानीपूर्वक उखाड़कर नष्ट कर दें। गुरदासपुर बेधक की रोकथाम के लिए गन्ने के ऊपर का सूखा भाग काटकर नष्ट कर दें।
- तोरिया की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु पी.टी. 30, पी.टी. 303, पी.टी. 507, संगम, भवानी, उत्तरा आदि किस्में उपयुक्त हैं। बीज दर 4 कि. ग्रा. प्रति है. 30 सेमी. की लाईन में 3-4 सेमी. गहरी बुवाई करें। बीज को 2.5 ग्राम थाइराम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। उर्वरकों में फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग लाभदायक होता है क्योंकि इससे फसल को 12 प्रतिशत सल्फर मिल जाती है।
- अच्छी पैदावार व आमदनी प्राप्त करने के लिए इस माह 50\*50 सेमी. की दूरी पर टमाटर की रोपाई करें।
- अगेती आलू की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में की जा सकती है। इसके लिए कुफरी चन्द्रमुखी व कुफरी अशोका उन्नत किस्में हैं।
- नीबू वर्गीय फलों को गिरने से रोकने के लिए 2, 4-डी या नैथलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- बेर में चूर्णिल आसिता की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

#### पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि हेतु-

#### माह जुलाई:

- टमाटर/मिर्च, अदरक, हल्दी में बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत

इण्डोफिल एम-45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें। जल निकास का प्रबन्ध करें।

- सेब/नाशपाती के बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुवाई करें। कज्जली धब्बा रोग की रोकथाम हेतु जीनेब व ब्लाइटाक्स-50 का छिड़काव करें।
- आड़ू, आलू, बुखारा व खुबानी में भूरा विगलन की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

### माह अगस्त:

- सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व पर्याप्त नमी की दशा में 2.0 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली प्रयोग करें। तना छेदक कीट के नियंत्रण के लिए करटाप हाइड्रोक्लोराइड 50 एस.पी. 600 ग्राम/है. की दर से छिड़काव करें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई करें। कमला कीट एवं गर्डिल विटिल कीट नियंत्रण के लिए प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1 लीटर/है. की दर से छिड़काव करें।
- आलू, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक, हल्दी में झुलसा नामक बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 फफूंदनाशक का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी, लोबिया में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। खड़ी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति है. की दर से टाप ड्रेसिंग करें।
- खीरा वर्गीय फसलों में 10-15 ग्राम यूरिया प्रति थाले की दर से डालें।
- नीबू वर्गीय फल, सेब, नाशपाती, आलू, बुखारा एवं खुबानी में फल विगलन की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

### माह सितम्बर:

- असिंचित क्षेत्रों में धान एवं मंडुवा में झोंका रोग नियंत्रण के लिए लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम या एडिफनफास की 14-20 ग्राम मात्रा को 15-20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। 10 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करें। धान में खैरा रोग नियंत्रण हेतु 100 ग्राम जिंक सल्फेट को 400 ग्राम यूरिया अथवा 50 ग्राम बुझे हुए चूने के 20 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें। पत्ती लपेटक कीट के लिए डाईमैथोएट 30 ई.सी. को 3 मि.ली. प्रति नाली की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च में झुलसा बीमारी/फलों पर धब्बे दिखाई देने पर इण्डोफिल 45 नामक दवा का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन के फल छेदक तथा तना छेदक कीट से बचाव हेतु क्लोरानाईनीलीप्रोल 18.5 एस.सी. 200 मि.ली./है. की दर से छिड़काव करें।
- सेब की नर्सरी के बीजू पौधों पर टी-चश्मा चढ़ाएं। सेब/नाशपाती में रुइया कीट की रोकथाम हेतु क्लोरपाइरीफॉस का छिड़काव करें। दुग्ध अंगमारी की रोकथाम हेतु बोर्डो मिश्रण (4:4:50) का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलू बुखारा पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

### पशुपालन/मत्स्य पालन एवं अन्य-

#### माह जुलाई:

- वाह्य परजीवी नाशक का बाड़े में छिड़काव करें। पतले गोबर की बीमारी से बचाव हेतु सूखे चारे की पर्याप्त मात्रा 30 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दें।
- कुक्कुटों के बिछावन को सूखा रखने के लिए इसकी नियमित गुड़ाई करें। इसके लिए बुझा हुआ चूना 1.25 कि.ग्रा. प्रति वर्ग मी. की दर से मिलायें। चूजों में काक्सीडियोसिस रोग की रोकथाम के लिए उचित उपाय करें।
- तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन (प्लवकों) का निरीक्षण करें। मत्स्य बीज संचय के पूर्व पानी की जाँच करें एवं पी.एच. 7.5 से 8.0 व घुलित आक्सीजन 3-7 मि.ग्रा. प्रति लीटर रखें। 10-20 क्यू. प्रति है. प्रति माह कच्चे गोबर का प्रयोग करें।

#### माह अगस्त:

- पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलायें।
- तालाब में 25-50 मि.मी. आकार के 10000/है. मत्स्य बीज का संचय करें। गोबर की खाद के प्रयोग से 15 दिनों के बाद एन.पी.के. खादों (यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व पोटाश) का प्रयोग करें। एन.पी.के. खादों के प्रयोग के 15 दिनों के पश्चात् 10-20 क्यू./है. गोबर की खाद का प्रयोग करें।

#### माह सितम्बर:

- यदि पशु मिट्टी खा रहा है तो उसे संतुलित आहार के साथ-साथ 40 से 50 ग्राम खनिज मिश्रण दें, साथ ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार अन्तः कृमिनाशक दवा पिलायें। यकृत कृमि, निमोनिया एवं दस्त से बचाव हेतु पशु चिकित्सक की सलाह लें।
- तालाब के पानी में प्लवकों का निरीक्षण करें व संतोषप्रद मात्रा को कायम रखें। मछलियों के भार का 2-3 प्रतिशत की दर से परिपूरक आहार दें।

## प्रसार शिक्षा निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा ने भारतीय कौशल विकास परिषद द्वारा प्रायोजित अप्रैल 10 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर पर एक्वाकल्चर वर्कर प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा अप्रैल 18-23 तक प्रसार/भ्रमण/अध्ययन कार्यक्रम हेतु भा.कृ.अनु.प., केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊय नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में प्रतिभाग किया गया।
- डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा मैनेज, हैदराबाद में प्रशिक्षण **Strategies for Improving Delivery Mechanism of Extension** में मई 27-29 में प्रतिभाग किया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा जून 01-04 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग) एवं जनपद-चमोली में एक-एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु चिन्हित जोशीमठ के कोटी स्थित आलू फार्म तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली) का भ्रमण किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा **VPKAS**, अल्मोड़ा की इंस्टीट्यूट मैनेजमेन्ट कमेटी की बैठक में जून 11 को प्रतिभाग किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) में नोडल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट-कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर द्वारा संचालित एक वर्षीय डिप्लोमा (**DAESI**) के संचालन के लिए फैसिलिटेटर के चयन हेतु जून 14 को साक्षात्कार में समिति के अध्यक्ष के रूप में भाग लिये।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा जून 15-21 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)य ढकरानी (देहरादून)य जाखधार (रुद्रप्रयाग)य ग्वालदम (चमोली) एवं मटेला (अल्मोड़ा) के प्रसार कार्यों का अनुश्रवण किया गया तथा ग्वालदम (चमोली) के औली में प्रस्तावित कृषि विज्ञान केन्द्र का स्थलीय भ्रमण किया गया।
- डा. महेन्द्र सिंह पाल, संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा ने जून 19-22 में कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट एवं पिथौरागढ़ का भ्रमण किया। केन्द्रों के वैज्ञानिकों के साथ गाँवों का भ्रमण कर किसानों से कृषि विकास से सम्बन्धित वार्ता की। लोहाघाट में हार्ड-टेक सब्जी उत्पादन एवं पिथौरागढ़ में कीवी पर हो रहे अनुसंधान कार्यों से अनेक कृषक लाभान्वित हो रहे हैं। डा. पाल ने दोनों केन्द्र के अनुसंधान प्रक्षेत्र का भी भ्रमण किया और आवश्यक निर्देश दिये, जिससे अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों में तेजी लाई जा सके।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा जून 29 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून) में संचालित हो रहे विभिन्न कार्यक्रमों का अनुश्रवण किया गया।

## 106वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा 106वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन पंतनगर में सितम्बर



27-30, 2019 तक किया जा रहा है, जिसमें कृषि निवेश से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्मे, स्वयं सेवी संस्थाएं, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की फर्मे एवं कृषि से सम्बन्धित शैक्षणिक/शोध संस्थान आदि अपने स्टॉल सहित सादर आमंत्रित हैं। किसान मेले में आयोजित किये जाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों के विवरण निम्नवत हैं :-

### प्रमुख आकर्षण

- \* अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदर्शनों का अवलोकन
- \* कृषि सूचना केन्द्र का अवलोकन
- \* आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन
- \* उन्नतशील बीज एवं पौधों की बिक्री
- \* कृषि उद्योग प्रदर्शनी
- \* विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री

### विशेष कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएँ

फूल-फूल, शाक-भाँजी एवं परिरक्षित पदार्थों की प्रदर्शनी व प्रतियोगिता	27-28 सितम्बर
संकर बछियों की नीलामी:- शैक्षणिक डेरी फार्म, नगला (अपरान्ह 2.00 बजे)	28 सितम्बर
पशु प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता:- पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय (पूर्वान्ह 10.00 बजे)	29 सितम्बर
विशेष व्याख्यानमाला:- गाँधी हॉल (अपरान्ह 2.30-3.30 बजे)	27-29 सितम्बर
किसान गोष्ठी:- गाँधी हॉल (अपरान्ह 3.30-6.30 बजे)	27-29 सितम्बर
सांस्कृतिक कार्यक्रम:- गाँधी हॉल (सांय 7.00-8.30 बजे)	27-29 सितम्बर
समापन एवं पुरस्कार वितरण:- गाँधी हॉल (अपरान्ह 3.00 बजे)	30 सितम्बर

मेले में स्टॉल लगाने एवं अन्य सम्बन्धित विशेष जानकारी निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. पी.एन. सिंह एवं मेला समन्वयक, डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक के दूरभाष संख्या 05944-234812 (कार्या.), 233967 (आवास) एवं मो. 07500241450 से प्राप्त की जा सकती है।

## निदेशक की कलम से



बढ़ती जनसंख्या एवं उद्योगीकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का आकार निरन्तर सिमटता जा रहा है। अतः भोजन आपूर्ति हेतु अनाज के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए खेतों में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशी, फफूँदनाशी, खरपतवारनाशी आदि का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। जिस प्रकार ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों के लिए घातक हैं उसी प्रकार खेतों में इनके अनियोजित प्रयोग से खाद्य पदार्थ भी प्रदूषित हो जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव मानव, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों पर पड़ता है जो अन्ततः पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाता

है। ये रसायन एवं रासायनिक उर्वरक वातावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं। इन सभी समस्याओं से निपटने हेतु हमें ऐसे विकल्प खोजने होंगे, जिनके प्रयोग से मानव व सभी जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े एवं वातावरण भी सुरक्षित हो। इस दिशा में 'जैविक खेती' एक महत्वपूर्ण विकल्प है, जो स्थाई, विश्वसनीय, प्रदूषण रहित, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी एवं रसायन अवशेष रहित उत्पादन की लाभकारी तकनीक है। इसके द्वारा गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन के लिए स्थानीय जलवायु के अनुकूल विकसित उत्पादन तकनीकों, जैविक खाद, जैविक कीटनाशक उत्पादन तकनीक व जैव नियंत्रण की विभिन्न विधियों आदि के समुचित प्रबन्धन की जानकारी आवश्यक है। जैविक खेती हेतु रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खाद एवं दवाइयों के प्रयोग को बढ़ावा देकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीक की जानकारी कृषकों तक पहुंचाना जरूरी है। इससे जल, मृदा व वातावरण शुद्ध रहेगा व प्रत्येक मनुष्य एवं जीवधारी भी स्वस्थ रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 'जैविक खेती' को अपनाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। 'जैविक खेती' के लाभ से लोगो को अवगत कराने हेतु कृषि विभाग द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर 'जैविक कृषि मेले व फूड फेस्टिवल' का भी आयोजन किया जाता है। इसमें प्रदेश भर के किसान कृषि की आधुनिक तकनीकों से जैविक खेती की विधि से खेती करते हैं व स्थानीय, देशी व विदेशी पर्यटकों द्वारा जैविक उत्पादों की अच्छी खरीद से जैविक खेती करने वाले किसानों को अपनी फसल से सुलभ बाजार मिलता है।

भारत में 60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ऐसा है जहाँ जलवायु की अनुकूलता के कारण जहरीले कीटनाशक व रासायनिक उर्वरकों की बहुत ही कम मात्रा या इनके बिना भी खेती की जा सकती है, जिसमें उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार भारत के अन्य राज्यों की भांति उत्तराखण्ड में भी 'जैविक खेती' को आधुनिक वैज्ञानिक तरीको से बढ़ाने का व्यापक प्रचार व प्रयास निःसन्देह ही कृषि जगत में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकता है, जिससे कि ग्रामीणों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के साथ-साथ पर्वतीय क्षेत्रों से तेजी से हो रहे पलायन को भी रोका जा सकता है। कृषि बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार 'जैविक खेती' से प्रथम दो-तीन साल तक फसल उत्पादन पर असर पड़ता है, लेकिन उसके बाद उचित वैज्ञानिक तरीकों से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वह 'जैविक खेती' की आधुनिक तकनीकों व अनुसंधानों के व्यापक प्रचार-प्रसार द्वारा सुरक्षित पर्यावरण व उत्तम मानव स्वास्थ्य के साथ प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देगे। इस पत्रिका को तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) की सराहना करता हूँ तथा उन्हें धन्यवाद देना अपना कर्तव्य मानता हूँ।

  
(पी0एन0 सिंह)

सम्पर्क सूत्र :- डा0 पी0एन0 सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

रुधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944-233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee\_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944-234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800-180-1551

## दृश्य यात्रा



कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ